# अध्याय-द्वितीय

# संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

# अध्याय द्वितीय

## संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे वह भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो, चाहे सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हो संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारंभिक कदम है। समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है।

साहित्य का सावधानीपूर्वक पुनरावलोकन अनुसंधान से संबंधित क्षेत्र में अनुसंधानकर्ता को महत्वपूर्ण चरों के बारे में जानकारी प्रदान करता है तथा उसके क्षेत्र की सीमा में स्थित चरों को चुनने में मदद करता है तथा पूर्व में किये गये शोधकार्य की पुनरावृति को रोकता है, वर्तमान अध्ययन के लिये आधारशिला का कार्य करता है। साहित्य के पुनरावलोकन के माध्यम से एक अनुसंधानकर्ता भावी अनुसंधानों के लिये एक अच्छा परिदृश्य बनाता है। साहित्य का सृजन पुनरावलोकन अनुसंधानकर्ता को वर्तमान अध्ययन से संबंधित पूर्व में किये गये अध्ययनों को एकत्रित तथा स्वीकृत करने में सहायक होता है। पूर्व में किये गये अध्ययनों का एकीकृत संग्रह अनुसंधानकर्ता को संबंधित शोध को पहचानने में मदद करता है।

### 2.1 संबंधित साहित्य का पुनारावलोकन

संबंधित साहित्य की समीक्षा अनुसंधायक को जिस क्षेत्र में वह अनुसंधान करने वाला है उसमें वर्तमान ज्ञान में परिचय कराती है तथा निम्न विशिष्ट उद्देश्य पूर्ण करती है।

1 संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधायक को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

2 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधानकर्ता को पूर्व में किये गये शोधकार्य की पुनरावृत्ति करने से रोकता है।

3 उपयुक्त शोध विधियों के चयन में मदद करता है।

4 परिकल्पना को लागू करने तथा अनुसंधान की रूपरेखा निर्धारक करने में सहायक होता है।

5 तुलनात्मक अध्ययन एवं तत्संबंधी व्याख्या हेतु आंकड़ो का निर्धारण करने में मदद् करता है।

## 2.2 शोधकार्य से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

प्रस्तुत अध्ययन का केंद्र बिंदु प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थी है तथा संपूर्ण लघुशोध प्रबंध विद्यार्थी की अधिगम प्रक्रिया से संबंधित है। प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित शोध साहित्य के अंतर्गत शैक्षिक समानता के अंतर्गत विद्यालय में छात्रों के अधिगम हेतु प्रदान की जाने वाली भौतिक एवं शैक्षिक सुविधाओं पर हुये शोधकार्यों को सम्मिलित किया जा सकता है तथा प्राथमिक स्तर पर विद्यालय में विद्यार्थियों को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं पर आधारित लघुशोध कार्यों को भी वर्णित किया जा सकता है। उपरोक्त बिदुओं को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन से संबधित कुछ शोधकार्य निम्न है :-

◈ ESWARA PRASAD AND SHARMA. R. (1982)

Wastage stagnation and Inequality of opportunity in Rural Primary Education ; A case study of Andhra Pradesh.

अध्ययन के उद्देश्य थे : हाईस्कूल स्तर के विद्यालयों में न्यूनतम आधारभूत सुविधाओं जैसे :- भवन, फर्नीचर, पुस्तकालय, स्वास्थ्य और सफाई व्यवस्था की जानकारी प्राप्त करना।

अध्ययन के निष्कर्ष निम्न प्राप्त हुये :-

- विद्यालय में रूकने वालों में लड़कियों में स्थिरता लड़कों की अपेक्षा कम पायी गयी।
- निम्न वर्गीय व्यक्तियों की स्थिति में स्थिरता अन्य वर्ग के व्यक्तियों की तुलना में अधिक है।
- हरिजनों में विद्यालय छोड़ने वालों की संख्या अन्य जातियों की तुलना में अधिक पायी गयी।
- विद्यालय छोड़ने वालों की दर कुरनूल जिले में अधिक पायी गयी जबकि गुंटूर जिले में यह दर कम पायी गयी।
- पिछले पाँच सालों में क्रमबद्ध रूप से लड़कियों में विद्यालय छोड़ने की दर लड़कों की तुलना में अधिक पायी गयी।

- शैक्षिक सुविधाओं का अपव्यय अनुसूचित जाति के लड़कों के लिये प्राथमिक स्तर पर 94.75% रहा जबकि लड़कियों के लिये 87.26% रहा। यह अपव्यय लड़कों के लिये औसत 45.40% रहा तथा लड़कियों के लिये 47.06% रहा।

- प्रति परिवार अध्ययन कर रहे औसत विद्यार्थियों की संख्या, विद्यालय छोड़ने वाले तथा कभी विद्यालय न जाने वाले विद्यार्थियों से अधिक है। प्रति परिवार, विद्यालय में प्रवेश लेने वाली लड़कियों की संख्या, लड़कों की संख्या से कम है।

- शैक्षिक अपव्ययता एवं शैक्षिक स्थिरता के दो महत्वपूर्ण कारक आय का स्तर और जाति है। इसके अतिरिक्ति सार्थक कारक हैं :- पिता का व्यावसायिक स्तर, माता-पिता तथा अभिभावकों का शिक्षा स्तर, परिवार में असाक्षर व्यक्तियों की संख्या।

◈ मुन्नेश कुमार और सोनू यादव (2004)

प्राथमिक विद्यालयों में दी जाने वाली भौतिक एवं शैक्षिक सुख-सुविधाओं का अध्ययन।

उ.प्र. के मैनपुरी, जनपद के अंतर्गत अध्ययन।

इस अध्ययन के उद्देश्य थेः- ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में प्रदान की जाने वाली भौतिक तथा शैक्षिक सुविधाओं का अध्ययन करना।

अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये :-

- ग्रामीण क्षेत्र में भवनहीन प्राथमिक विद्यालय आज भी है यद्यपि इनका प्रतिशत बहुत कम (3%) ही है लेकिन चयनित सभी ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में कमरों की संख्या, बरामदा, प्रधान अध्यापक के लिये अलग कक्ष, विद्यालय की चार दीवारी जैसी आधारभूत कमियां अक्सर देखने को मिली।

- सभी ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के बैठने की सामग्री (टाट-पट्टी, चटाई एवं दोनों ) की अपर्याप्तता देखी गयी।

- शहरी प्राथमिक विद्यालयों में 66% वातावरण शांत, 92% पेयजल एवं 42% शैचालय की व्यवस्था उपलब्ध थी वहीं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में इनका प्रतिशत 89, 97 एवं 71 पाया गया।

- केवल 25% ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में प्राथमिक चिकित्सा सुविधा पायी गयी, वहीं 18% ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में खेल के मैदान पाये गये जबकि शहरी क्षेत्र के शत प्रतिशत विद्यालयों में खेल के मैदान उपलब्ध पाये गये।

- सभी शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण सहायक सामग्री ( ग्लोब, मानचित्र, घड़ी, डस्टर, चॉक), शिक्षण संबंधी खिलौनो ( गिनतारा, अक्षरमाला, रिंग, रस्सी कूद, एवं मिट्टी की गोलियां ) की कमी पायी गयी।

- शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षिक भ्रमण जैसे कार्यक्रमों का अभाव पाया गया, लेकिन शहरी प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्यसहगामी क्रियाओं के आयोजन का 75 प्रतिशत पाया गया।

- GOVINDA. R. AND VARGHESE N.V. (1991)

The quality of basic education services in India:

A case study of the primary schooling in Madhya Pradesh:- Independent study National Institute of Educational planning administration.

अध्ययन के उद्देश्य थे-: प्राथमिक विद्यालयों के आस-पास का वातावरण एवं उन्हें प्रदान की जा रही सुविधाओं को देखना। शहर के महत्वपूर्ण स्थानों पर संचालित हो रहे प्राथमिक विद्यालयों एवं पिछड़े क्षेत्रों में संचालित हो रहे विद्यालयों की गुणवत्ता का तुलनात्मक विवेचन करना।

अध्ययन के लिए निष्कर्ष प्राप्त हुये :-

- विद्यालय की संपूर्ण संरचना को दृष्टिगत रखकर जिस स्तर की सुविधायें प्रदान की जाती है वह शिक्षण अधिगम वातावरण में निरंतरता तथा विद्यार्थी के उपलब्धि स्तर तथा विद्यालय की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक होता हैं।

- विद्यार्थी को जितना समय शिक्षण अधिगम क्रियाओं में व्यतीत करने को मिलता है उसका विद्यार्थी की उपलब्धि से उच्च धनात्मक सहसंबंध होता है।

- सामान्य शिक्षक द्वारा सभी विषय पढ़ाने से विद्यार्थियों की उपलब्धि में गिरावट देखी गयी अतः किसी विषय को उस विषय से संबंधित शिक्षक से ही पढ़ाना चाहिए।

- बेहतर भौतिक सुविधायें विशेषकर शिक्षण सामग्री एवं यंत्रों के संदर्भ में, उपलब्ध होना अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिये वांछनीय पायी गयी, जबकि अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिये शिक्षण सामग्री एवं यंत्रों का उचित प्रकार से प्रयोग करना आवश्यक है।

- गृहकार्य का दिया जाना भी विद्यालय की गुणवत्ता से संबंधित महत्वपूर्ण कारक है। निजी विद्यालयों के विद्यार्थी गृहकार्य एवं कक्षा कार्य के लिये अलग-अलग अभ्यास पुस्तिका बनाते हैं तथा गृहकार्य पर विशेष ध्यान देते हैं।

- सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकों की विद्यार्थियों के पास उपलब्धता उनकी शैक्षिक उपलब्धि से महत्वपूर्ण संबंध रखती है।

◈ Gupta. R.K. and Gupta . D. (1992)

A study of extent of utilization of material supplied under the operation black board scheme: A report of the first phase.

अध्ययन के उद्देश्य थेः ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालयों, को प्रदान की जाने वाली न्यूनतम आवश्यक सामग्री का पता लगाना।

अध्ययन के निम्न निष्कर्ष पाये गये :

- प्रतिशत की बात करें तो 216 विद्यालयों में से 83.8% में हवादार कमरों की व्यवस्था, 55.6% में बरामदे की सुविधा एवं 9.7 विद्यालयों में शौचालय की सुविधायें उपलब्ध थी।

- 46.3% विद्यालयों में कम से कम दो शिक्षक अध्यापन हेतु उपलब्ध थे जबकि 42% विद्यालयों में दो से अधिक शिक्षक उपलब्ध थे तथा 20.4% विद्यालयों में दो शिक्षकों मे से एक महिला शिक्षक थी।

- विद्यालयों में प्रदान की गयी सामग्री की प्रतिशत उपलब्धता निम्न पायी गयी :- पाठ्यक्रम (56%), पाठ्य पुस्तकें (85.2%), शिक्षक पत्रिका (62.5%), विश्व मानचित्र (95. 8%), भारत का मानचित्र (5.8%), राज्य मानचित्र (90.3%), और जिला मानचित्र (8.0%) उपलब्ध थे। ग्लोब (66.7%), चार्ट (75%), ब्लॉक (88.3%), स्ट्रिप (28.2%), टाइल्स (26. 9%), जिग्सा पज्जल (83.3%), खिलौने (60%), प्राथमिक विज्ञान किट (92.6%), गणित

किट (99.5%), मैग्जीन एवं न्यूज पेपर (0%), संगीत वाद्य यंत्र (पर्याप्त मात्रा में ), कक्षीय फर्नीचर (33.8% से 91.7% तक) तथा श्यामपट् (ब्लैक बोर्ड) 28.3% से 97.7%तक )।

◈ PACKKIAM M. (1990)

A study of operation black board scheme implemented in Sakkottai Panchayat Union Pasimpon Theyarthis Umagon district.

अध्ययन के उद्देश्य था :- ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड कार्यक्रम का प्राथमिक विद्यालयों में क्रियान्वयन का अध्ययन।

अध्ययन के निष्कर्ष था :-

- पंचायत संघ के 83% प्राथमिक विद्यालयों में भौतिक सुविधायें नहीं थी।
- लगभग सभी प्राथमिक विद्यालयों में दो या अधिक शिक्षक थे।
- ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदान की गयी सामग्री का प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा अच्छे तरीके से प्रयोग किया जा रहा था।
- निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा शिक्षक समग्री का बहुतायत से उपयोग किया जाता है।
- यदि सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों तथा निजी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की तुलना करें तो कक्षा में शिक्षण सामग्री प्राथमिक विज्ञान किट, पुस्तकालय हेतु किताबें, कक्षीय यंत्र और अभ्यास यंत्र का बहुतायत रूप से प्रयोग दोनों विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा किया जाता हैं।
- प्राथमिक सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के द्वारा खेल कूद सामग्री, खेल सामग्री, गणित किट एवं म्यूजिक यंत्रों का प्रयोग करने में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।